HISTORY, B.A. Hons. II - PAPER II

Causes of Concert of Europe's Failure (संयुक्त व्यवस्था की असफलता के कारण) :- यूरोप की संयुक्त व्यवस्था अधिक समय तक न चल सकी। 1822 ई० में हुई वेरोना कांग्रेस के पश्चात यह समाप्त हो गयी। यूरोप की संयुक्त व्यवस्था के असफल हो जाने के कारण निम्नलिखित प्रमुख हैं -

(i) **छोटे राज्यों का शामिल किया जाना :-** यूरोप की संयुक्त व्यवस्था प्रमुख पांच देशों के हाथ में थी। यूरोप के छोटे-छोटे राज्यों को इसमें सम्मिलित नहीं किया गया था। इससे उनमें इस व्यवस्था के प्रति अत्यधिक रोष था। छोटे राज्यों को इस व्यवस्था के संरक्षकों से सदैव खतरा बना रहता था, अतः वे निरन्तर इस व्यवस्था के विरोधी होते जा रहे थे।

(ii) **नेपोलियन की मृत्यु :-** यूरोप की संयुक्त व्यवस्था यूरोप में शान्ति बनाए रखने के लिए की गई थी। यूरोप का मुख्य खतरा नेपोलियन की ओर से रहता था। नेपोलियन की 1821 ई० में मृत्यु हो गई। उसकी मृत्यु के पश्चात् मित्र-राष्ट्रों को यह खतरा न रहा, अतः यह व्यवस्था स्वतः ही समाप्त होने लगी।

(iii) **विरोधी हित :-** यूरोपीय संयुक्त व्यवस्था के प्रतिपालक देशों के हित अलग-अलग थे। प्रत्येक देश सिर्फ अपने हित की बात सोचता था तथा उसी के अनुरूप कार्यवाही करना चाहता था। रूस यूनान की सहायता देना चाहता था, किन्तु इंगलैण्ड इसका विरोध कर रहा था क्योंकि ऐसा होने से इंगलैण्ड के भारतीय उपनिवेश को खतरा उत्पन्न हो जाता। इसी प्रकार प्रत्येक देश के हित अलग-अलग थे। ऐसी स्थिति में यह व्यवस्था अधिक दिनों तक नहीं चल सकती थी।

(iv) **प्रतिक्रियावादी विचार धारा :-** यूरोप की संयुक्त व्यवस्था के पतन का एक प्रमुख कारण आस्ट्रिया, रूस एवं प्रशा की निरंकुश एवं प्रतिक्रियावादी विचारधारा थी। फ्रांस की क्रांति से यूरोप में उत्पन्न समानता, स्वतंत्रता व भ्रातृत्व की भावना को वे शक्ति द्वारा कुचलना चाहते थे। डेविड थामसन ने इसी प्रकार के विचार व्यक्त करते हुए लिखा है, "आस्ट्रिया, रूस एवं प्रशा यूरोपीय संयुक्त व्यवस्था का प्रयोग प्रजातांत्रिक सिद्धांतों की बाढ़ को रोकने के लिए चाहते थे।" इंगलैण्ड इस प्रतिक्रियावाद का विरोधी था। इसी कारण पँचमुखी संघ में फूट पड़ गयी तथा यह व्यवस्था पतन की ओर अग्रसर हो गयी।

Ajanta Officer

(v) इंगलैण्ड का अलग होना :- पंचमुखी संघ के राष्ट्रों की प्रतिक्रियावादी नीतियों को इंगलैण्ड अधिक समय तक सह न सका तथा वह इससे अलग हो गया। इंगलैण्ड यूरोप का एक अत्यंत प्रमुख देश था। उसके अलग होते ही यह व्यवस्था चरमरा गयी एवं शीघ्र ही इसका अन्त हो गया। केटलबी ने लिखा है, 'ब्रिटेन का इस व्यवस्था से अलग होना, कांग्रेस प्रणाली के विघटन का एक प्रमुख कारण था।' इसी कारण मेटरनिख ने क्रुद्ध होकर कैनिंग के लिए कहा, "यह कुछ ईश्वर द्वारा यूरोप पर फेंका गया एक अनिष्टकारी उल्का।"

(vi) हस्तक्षेप की नीति :- इस व्यवस्था के पतन का एक मुख्य कारण अन्य देशों के मामलों में मित्र राष्ट्रों द्वारा हस्तक्षेप करना था। इंगलैण्ड इस नीति का विरोधी था तथा किसी भी देश के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप करना नहीं चाहता था। अतः संघ के देशों में आपसी ~~मतभेद~~ मतभेद उत्पन्न हो गया और इस व्यवस्था का पतन हो गया।

महत्व :- इस प्रकार उपरोक्त सभी कारणों से यूरोप की संयुक्त व्यवस्था का पतन हो गया। यह व्यवस्था 1815 ई. से 1822 ई. तक यूरोप पर छायी रही तथा उसके बाद ही यूरोपीय समस्याओं का निराकरण होता रहा। यद्यपि इस व्यवस्था को प्रारम्भ करने का उद्देश्य अच्छा था, किन्तु इसके सदस्य देशों के परस्पर हितों के कारण यह व्यवस्था अधिक समय तक स्थिर न रह सकी। फिर भी इसके महत्व को नकारा नहीं जा सकता। आधुनिक राष्ट्रसंघ व संयुक्त राष्ट्रसंघ को इस व्यवस्था का ही परिवर्तित रूप माना जाता है। इस व्यवस्था के कारण ही 1830 ई. एवं 1848 ई. की क्रान्तियों का विशेष प्रभाव यूरोप पर न हुआ। इस प्रकार यह व्यवस्था आगामी 30-40 वर्षों तक यूरोप में शान्ति बनाये रखने में सफल हुई। फिशर ने लिखा है, "अपनी परिसीमाओं के होते हुए भी इसने यूरोप को 40 वर्षों तक शान्ति प्रदान की।"